इकाई 12 लाभदायक एवं हानिकारक पौधे तथा जन्तु

- **मानव जीवन पर पौधों एवं जन्तुओं का प्रभाव (लाभदायक एवं हानिकारक)**
- **लाभदायक पौधे**
- **पौधों का महत्व - भोजन, रेशे, दवा, इमारती लकड़ी एवं ईधन के रूप में**
- **लाभदायक जन्तु**

पहले मनुष्य प्राकृतिक वातावरण में रहता था। भोजन के लिये वह जंगली जन्तुओं का शिकार करता, मछलियाँ पकड़ता, पक्षियों के घोसलों से अण्डे एकत्र करता तथा कन्द-मूल, फल आदि खाता था। जानवरों की खाल, पेड़ों की छाल तथा पत्तियों से अपना तन ढकता था।

धीरे-धीरे उसने पशुओं को पालना सीखा। उन्हें यह भी पता चला कि बीज से नये पौधे उत्पन्न होते हैं, इससे उसके मन में बीज बोने का विचार आया और उसने गेहूँ, धान, मक्का, सनई, पटसन, जूट आदि के पौधे उगाये और इस प्रकार वह खेती करने लगा। विकास केक्रम में बढ़ते औद्योगिकीकरण के कारण आज भी वह अपने चारों ओर पाये जाने वाले पौधों एवं जन्तुओं का दोहन नई-नई विधियों से कर रहा है। कृषि तथा उपयोगी पौधों का उत्पादन, मानव और पशुओं को पालना कृषि-कर्म (एंाीकल्चर) कहलाता है।

12.1. मानव जीवन पर पौधों एवं जन्तुओं का प्रभाव

पौधे एवं जन्तु मानव जीवन के अभिन्न अंग हैं तथा वे हमारे जीवन को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। इनके प्रभाव के आधार पर इनको दो भागों में बाँटा जा सकता है -

1. हानिकारक पौधे एवं जन्तु 2. लाभदायक पौधे एवं जन्तु

चावल, सब्जी, फल, दूध, शहद, चमड़ा, ऊन, कागज आदि ऐसी ही अनेक वस्तुएं हैं। जिनका उपयोग हम दैनिक जीवन में करते हैं। क्या आप जानते हैं कि ये कहाँ से प्राप्त होती हैं ?

इनके अलावा अधिकांश जन्तु एवं पादप मानव जीवन को कई प्रकार से प्रभावित करते हैं।

क. हानिकारक पौधे

कुछ सूक्ष्मजीव मनुष्य को तो हानि पहुँचाते ही हैं, जन्तुओं और पौधों को भी हानि पहुँचाते हैं और तरह-तरह के रोग उत्पन्न करते हैं। कुछ फसलों को नष्ट करते हैं, तो कुछ उन वस्तुओं पर उत्पन्न होते हैं और उन्हें विकृत कर देते हैं, जिनका उपयोग हम करते हैं।

- कुछ पौधे खुजलाहट पैदा करते हैं। जैसे - गाजर घास को छू जाने पर त्वचा में खुजली उत्पन्न हो जाती है। केंवाच के रोंये, कच्चे काजू के आवरण (छिलके) तथा पपीते के दूध में भी एक तत्व होता है, जो त्वचा में खुजली उत्पन्न कर देता है।
- पूर्व काल में शिकारी कुछ पौधों जैसे - रिसपैंचा, कुरारे के रस में अपने बाणों को बुझा लेते थे, जिससे उन्हें शिकार को मारने में आसानी होती थी। क्या आप अन्य किसी जहरीले पौधे के बारे में जानते हैं ? पीली कनेर की पत्ती तथा मदार (आक) का दूध भी जहरीला होता है।
- कुछ पौधे जैसे भांग, पोस्ता तथा कोको आदि में एक प्रकार का पदार्थ पाया जाता है जिन्हें मादक पदार्थ कहा जाता है। मादक पदार्थों में गांजा,चरस, अफीम, मारफीन, हेरोइन एवं कोकीन नामक पदार्थ होते हैं। कुछ लोग नशे के लिए इन पदार्थों का सेवन करते हैं,जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। इनसे हृदय रोग,

वैंâसर, क्षय रोग, लीवर सिरोसिस, मानसिक उत्तेजना तथा स्मरण शक्ति में कमी आदि रोग उत्पन्न होते हैं।

- कुछ पौधे जन्तुओं में रोग उत्पन्न करते हैं। मनुष्यों में दाद, खाज व गंजापन कवकों द्वारा होता है।

ख. हानिकारक जन्तु

- पौधों की ही भाँति जन्तु भी हमारे लिए हानिकारक हैं। कुछ जन्तु जहरीले होते हैं, दूसरों को काटते हैं। क्या आप किसी विषैले जन्तु का नाम बता सकते हैं ? साँप, बिच्छू विषैले जन्तु होते हैं, फिर भी इन जन्तुओं के विष को थोड़ी मात्रा में लेकर औषधियाँ तैयार की जाती है। बर्रे, मधुमक्खी तथा बिच्छू के डंक का अनुभव बहुत कटु होता है। चींटी, खटमल तथा मच्छर के काटने से खुजली व जलन होने लगती है।
- कुछ जन्तु रोगों के वाहक भी होते हैं। जन्तु,जो रोगााणुओं को एक जगह से दूसरी जगह फैलाते हैं, उन्हें रोगवाहक जन्तु कहते हैं। जैसे - मक्खी, मच्छर आदि रोगवाहक जन्तु हैं। क्या आप जानते हैं कि मलेरिया बीमारी किस जन्तु द्वारा फैलती है ? जूँ, खटमल तथा पिस्सू भी रोग वाहक जन्तु हैं। हैजा,आमातिसार (पेचिस),अतिसार (डायरिया), टायफाइड, तपेदिक जैसी बीमारियाँ घरेलू मक्खी द्वारा फैलती हैं। डेंगू, चिकनगुनिया, मलेरिया तथा फाइलेरिया (फील-पाँव) मच्छरों की अलग प्रजातियों के काटने से होता है।
- संक्रमित कुत्ते अथवा कुछ अन्य जानवरों के काटने से रेबीज नामक खतरनाक बीमारी हो जाती है। मनुष्य भोजन के लिए खेती द्वारा अनाज, फल, सब्जी आदि पैदा करता है लेकिन कोई फसल ऐसी नहीं होती जिससे अनेक प्रकार के जन्तु अपना भोजन न प्राप्त करते हों अर्थात् कुछ जन्तु फसल तथा पौधों को नष्ट कर हानि पहुँचाते हैं जैसे -कुछ कीड़े और उनके डिम्बक (लार्वा) पौधों पर ही पलते हैं, कुछ जन्तु पेड़-पौधों की जड़, तना, पत्ती, पुष्प, बीज आदि सभी पर आक्रमण करते हैं जिससे फसल प्रभावित होती है और उत्पादन कम हो जाता है। आप

अनुमान लगा सकते हैं कि ये जन्तु प्रतिवर्ष लगभग एक तिहाई फसल चट कर जाते हैं।

चित्र 12.1 रोग फैलाने वाले कुछ जन्तु

- टिड्डी पौधों की पत्तियों तथा कोपल तनों को खाती है (चित्र 12.2)। टिड्डी दलों की सूचना मात्र से किसानों के छक्के छूट जाते हैं। इनके एक-एक दल में करोड़ों टिड्डियाँ होती हैं। जब ये एक बार खेतों में आ जाती हैं, पूरी की पूरी फसल को खाकर चट कर जाती हैं। टिड्डियों को उड़ते समय हेलीकाप्टर द्वारा रसायनों के छिड़काव से नष्ट किया जा सकता है।
- चूहे खेतों में ही बिल बनाकर रहते हैं (चित्र 12.3)। ये खेत में फसलों को काटकर गिरा देते हैं और गिरे हुए पौधों की बाली सहित बिलों में खींच कर ले भी जाते हैं। इस प्रकार चूहे अनाज का बहुत बड़ा भाग खा जाते हैं तथा फसलों को हानि पहुँचाते हैं।
- कुछ लोग घरों में तोता पालते हैं। तोता फसलों एवं फलों को हानि पहुँचाने वाला पक्षी है। इसकी चोंच बहुत मजबूत, नुकीली तथा मुड़ी हुई होती है। चोंच की ऐसी बनावट उसे फल को कुतरकर खाने में सहायक होती है। तोता आम, लीची, अमरुद आदि फलों को खाकर हानि पहुँचाते हैं। वे सभी फसलें जिनमें बालें जैसे -गेहूँ, जौ, मक्का आदि निकलती हैं उन्हें भी तोता नष्ट कर देता है।
- नीलगाय एक वन्य प्राणी है। इसको पाड़ा व घोड़रोज या वनरोज के नाम से भी जानते हैं। इनका आकार घोड़े के समान होता है। ये हल्के नीले रंग के होते हैं। नीलगाय प्राय: झुण्ड बनाकर रहते हैं। छोटे पौधे, पेड़ों की पत्तियाँ इनका प्रिय भोजन हैं। इनके प्रकोप के कारण अरहर, चना, मटर व अन्य दलहनी फसलों की

खेती अधिक प्रभावित होती है। थोड़े ही समय में नीलगाय खड़ी फसल नष्ट कर देती है।

- उपरोक्त जन्तुओं के अतिरिक्त गिलहरी, हाथी आदि भी फसलों तथा पौधों को नष्ट कर हानि पहुँचाते हैं।

चित्र 12.2 टिड्डी

चित्र 12.3 चूहा

12.2. लाभदायक पौधे

मानव जीवन में पौधों को उनके उपयोग के आधार पर कई समूहों में विभक्त कर सकते हैं। जैसे भोजन प्रदान करने वाले, मसाले प्रदान करने वाले, औषधि प्रदान करने वाले, रेशे प्रदान करने वाले, फल प्रदान करने वाले आदि।

(अ) भोजन प्रदान करने वाले पौधे

मनुष्य की प्रथम मूलभूत आवश्यकता भोजन है। अनाज हमारा प्रमुख भोजन है। चावल, गेहूँ, जौ, मक्का, बाजरा आदि से मण्ड (कार्बोहाइड्रेट) मिलता है। इनमें कुछ विटामिन व प्रोटीन भी पाये जाते हैं। अनाज के पौधों के तनों का उपयोग पशुओं के चारे के रूप में किया जाता है।

- अनेक पौधों के विभिन्न भागों जैसे - जड़ से मूली, गाजर, तना से आलू, प्याज, पत्ती से चौलाई, पालक, पुष्प से गोभी, फल से सेम, बैगन, मिर्च, भिण्डी, बीज से राजमा, मटर आदि प्राप्त की जाती है। हरी सब्जियाँ, विटामिन तथा खनिज लवणों का स्रोत होती हैं।

- फल पोषक तत्वों के अच्छे स्रोत हैं। केले से अत्यधिक ऊर्जा व खनिज प्राप्त होते हैं। अमरूद, सन्तरा तथा अन्य सभी साइट्रस फलों (नींबू जाति के फल)से विटामिन `सी' अत्यधिक मात्रा में प्राप्त होता है। भोजन को स्वादिष्ट बनाने में इमली और आम के फलों का प्रयोग किया जाता है।
- दालें जैसे अरहर, चना, मटर, मूंग, उरद, मसूर, राजमा आदि से प्रोटीन मिलती है। अत: दालें मानव के लिए प्रोटीन का प्रमुख स्रोत हैं।
- मसाले भोजन को स्वादिष्ट और सुगन्धित बनाने में उपयोग किया जाता है। ये भोजन को संरक्षित रखने में भी सहायक होते हैं। मसाले पौधों के विभिन्न भागों से जैसे फल से लाल मिर्च, काली मिर्च, जीरा, अजवाइन, जड़ों से हींग, तथा तनों से हल्दी, अदरक आदि प्राप्त किये जाते हैं।
- तेल का उपयोग भोजन बनाने में विभिन्न रूपों में किया जाता है। जैसे - सरसों, तिल, अलसी, सोयाबीन, नारियल आदि का तेल मुख्यत: भोजन पकाने में किया जाता है। केवड़ा व गुलाब के पुष्प से तेल प्राप्त किया जाता है और उनका उपयोग भोजन को सुगन्धित बनाने में किया जाता है। धान की भूसी से भी तेल प्राप्त किया जाता है।

(ब) रेशे प्रदान करने वाले पौधे :-

भोजन के बाद मनुष्य की दूसरी मूलभूत आवश्यकता `वस्त्र' है। कपास, जूट, नारियल के पौधों से रेशे प्राप्त होते हैं जिनसे वस्त्र तथा अन्य उपयोगी वस्तुएं तैयार की जाती हैं। कपास के फल से रूई, नारियल से नारियल के रेशे या जटा तथा जूट के पौधे के तने से जूट के रेशे प्राप्त होते हैं। क्या आप नारियल के रेशे से बनी कुछ वस्तुओं के नाम बता सकते हैं ? रुई से सूत बनाकर वस्त्र बनाये जाते हैं। जूट से बोरे तथा जटा का उपयोग रस्सी, चटाई, गद्दे तथा सोफे आदि बनाने में होता है।

(स) औषधि प्रदान करने वाले पौधे -

आवश्यकता के फलस्वरुप मानव ने उन पौधों को खोज निकाला है जो औषधीय गुणों से युक्त हैं। हल्दी, अदरक, मुलेठी, लहसुन, लौंग, हींग, अजवाइन, तुलसी आदि का उपयोग दैनिक जीवन में औषधि के रूप में किया जाता है। पेड़-पौधों के प्राय: सभी भागों का प्रयोग औषधि बनाने के लिये होता है। नीम के पेड़ के प्रत्येक भाग का उपयोग हम कई तरह से करते हैं। औषधीय गुणों के कारण उसे ``प्राकृतिक औषधालय'' कहा जाता है। तालिका 12.1 में कुछ औषधीय पौधे एवं उनके उपयोग दर्शाये गये हैं।

तालिका 12.1

(द) इमारती लकड़ी तथा ंइंधन प्रदान करने वाले पौधे

सभी वृक्षों से लकड़ी प्राप्त होती है, जिसका प्रयोग सूखने पर ंइंधन के रूप में हो सकता है। कुछ विशेष वृक्षों जैसे साखू, शीशम, सागौन की लकड़ी का प्रयोग आलमारी, कुर्सियाँ, मेज, पलंग, दरवाजे आदि बनाने में किया जाता है। क्या आप जानते हैं कि भारत के कई प्रदेशों में केवल लकड़ी और बाँस के ही घर बनाये जाते हैं। कागज बनाने में लकड़ी का प्रयोग कच्चे माल के रूप में किया जाता है। पापुलर वृक्ष की लकड़ी दियासलाई तथा कागज बनाने में काम आती है।

इसके अतिरिक्त अनेक पौधों के पुष्प एवं पत्तियाँ सुन्दर रंग बिरंगी होती हैं जिनका उपयोग सजावट के रूप में किया जाता है। जैसे - चमेली, माधवीलता, चम्पा, बोगेनविलिया, मनीप्लांट आदि लतायें सजावटी पौधे हैं। फ्लाक्स, साल्विया, गैम्प्रâीना, एस्टर, गुलाब, गेंदा, डहेलिया, गुल्दावदी, चाँदनी, कैक्टस, सूरजमुखी,पिटूनियाँ आदि

सजावटी पुष्प हैं। फर्न, मोरपंखी, ताड़, अशोक आदि के पत्तों एवं टहनी का उपयोग भी सजावटी पौधों के रूप में करते हैं।

12.3. लाभदायक जन्तु

पर्यावरण में विभिन्न प्रकार के जन्तु पाये जाते हैं। इन जन्तुओं से अनेक उपयोगी वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। भोजन, वस्त्र, कृषि-कार्य, परिवहन, घर की सुरक्षा आदि के लिए जन्तुओं को पाला जाता है जैसे - भेड़, बकरी, बैल, घोड़ा, कुत्ता आदि। कुछ जन्तु जंगली होते हैं। जैसे - शेर, भालू, हिरन, गेंडा तथा लकड़बग्घा आदि।

(अ) खाद्य पदार्थ देने वाले जन्तु

- गाय, भैंस और बकरी से हमें दूध मिलता है। दूध एक संतुलित आहार है जिसके सेवन से हम निरोग और स्वस्थ रहते हैं। भेड़, बकरी तथा मुर्गी से गोश्त मिलता है। गोश्त (माँस) में पायी जाने वाली प्रोटीन हमारे शरीर को मजबूत बनाती है। मुर्गी तथा बतख के अण्डे भोजन के रूप में भी प्रयोग होते हैं। मुर्गियों तथा चूजों की देख-रेख करना व उनमें प्रजनन की प्रक्रिया को मुर्गी-पालन (पोल्ट्री) कहा जाता है। एक अच्छी प्रजाति की मुर्गी एक वर्ष में लगभग 260 अण्डे देती है। मुर्गी द्वारा अण्डे को 21 दिनों तक `सेने' के पश्चात् अण्डे से चूजा बाहर निकलता है।
- मधुमक्खी के छत्तों से शहद मिलता है। मधुमक्खी के छत्ते अधिकतर वृक्षों की डालों पर, पुराने पेड़ों के कोटर, गुफाओं आदि में लगे मिलते हैं। (चित्र 12.8) मधुमक्खियाँ फूलों से पराग लाती हैं जिससे शहद बनता है। शहद पौष्टिक, सुपाच्य

एवं रोगाणुरोधक होता है। इसका उपयोग दवा के रूप में किया जाता है। छत्ते से और क्या मिलता है ? मधुमक्खी के छत्ते से हमें मोम भी मिलता है जो पोंलिश, मोमबत्ती तथा सौंदर्य प्रसाधन बनाने में काम आता है। बड़ी मात्रा में शहद प्राप्त करने के लिए मधुमक्खियों को पाला जाता है इसे मधुमक्खी-पालन (एपीकल्चर) कहते है। एक किलो शहद के लिए एक मक्खी को पराग एकत्रित करने के लिए लगभग दस लाख चक्कर लगाने पड़ते हैं। एक पूर्ण विकसित छत्ते से एक वर्ष में लगभग 20 किलोाम शहद निकलता है।

- मछलियाँ तालाब, नदी, झील तथा समुद्र के जल में पायी जाती हैं। इनकी लाख तैयार की जाती है। लाख कीट के शरीर को सुखाकर एक प्रकार का लाल रंग प्राप्त किया जाता है, जिसे महिलायें महावर लगाने के काम लाती हैं।
- हाथी एक वन्य जन्तु है। हाथी को कुछ लोग पालतू बनाकर वनों में बोझ उठाने का कार्य करते हैं।
- शंख वास्तव में जन्तुओं के बाह्य कवच हैं जो कैल्सियम कार्बोनेट से बने होते हैं। शंख का प्रयोग सजावट, पूजा तथा दवायें (भस्म) आदि बनाने में किया जाता है।
- कस्तूरी मृग वन्य जन्तु है। कस्तूरी मृग से कस्तूरी नामक पदार्थ प्राप्त किया जाता है जिसका उपयोग औषधि निर्माण में करते हैं।
- वन्य जन्तुओं को पालना, शिकार करना एवं किसी भी प्रकार से उन्हें नुकसान पहुँचाना वर्जित एवं दंडनीय अपराध है।

चित्र 12.7मधुमक्खी का छत्ता

(ब) उत्पाद देने वाले जन्तु -

रेशम के कीड़ों से रेशम प्राप्त होता है, जिससे चिकने सुन्दर वस्त्र बनाये जाते हैं ।

रेशम कीट से रेशम कैसे प्राप्त किया जाता है ?

रेशम के कीड़ों में एक विशेष iन्थि होती है जिसे रेशम-iन्थि कहते हैं । इस iन्थि से अत्यन्त महीन लसदार पदार्थ निकलता है , जिसको रेशम कीट का लारवा (इल्ली) अपने शरीर के चारों ओर लपेटकर गेंद जैसी संरचना बना लेता है और अब तक लारवा, प्यूपा (Pupa) में बदल चुका होता है। इस प्यूपा के चारों ओर लिपटी गेंद जैसी संरचना कोया या कोकून कहलाती है चित्र 12.11। हवा के सम्पर्क में यही लसदार पदार्थ सूखकर रेशम बन जाता है । क्या आप जानते हैं कि ये कहाँ पर पाले जाते हैं ?

रेशम के कीड़ों को शहतूत के पेड़ पर पाला जाता है । रेशम-कीड़ों का पालन-पोषण तथा रेशम बनाने की प्रक्रिया को रेशम कीट पालन (सेरीकल्चर) कहते हैं ।

रेशम-कीड़े के एक कोकून (कोया) से 700 से 1000 मीटर लम्बा रेशमी धागा निकलता है ।

लाख कीट से लाख प्राप्त होता है । लाख से पलिश, वर्निश, चपड़ा (सील मोहर लगाने की लाख) चूिड़याँ, iामोफोन रिकार्ड, बिजली का सामान, बटन, खिलौने आदि वस्तुएँ बनायी जाती हैं ।

लाख कीट से लाख कैसे प्राप्त होती है ?

लाख कीट (चित्र 12.12) अपने शरीर की रक्षा हेतु शरीर के चारों ओर मोटी पपड़ी के रूप में लाख का खोल बना लेते हैं, जिसे खरोंचकर पानी के साथ गलाकर शुद्ध लाख तैयार की जाती है ।

लाख कीट के शरीर को सुखाकर एक प्रकार का लाल रंग प्राप्त किया जाता है, जिसे महिलायें महावर लगाने के काम लाती हैं ।

(स) सहायक जन्तु

अनेक जन्तुओं जैसे - बैल, घोड़ा, गधा, खच्चर, हाथी, ऊँट का उपयोग सामान की ढुलाई, कृषि कार्य तथा सवारी करने में किया जाता है।

कुत्ता एक पालतू जन्तु है परन्तु इसका उपयोग घरेलू सुरक्षा, देश की सुरक्षा यहाँ तक कि बर्फीले क्षेत्रों में स्लेज गाड़ियाँ खींचने में भी किया जाता है।

हमने सीखा

- शाकाहारी मनुष्यों के लिये दालें प्रोटीन की प्रमुख स्रोत हैं।
- साइट्रस फलों में विटामिन सी प्रचुर मात्रा में पायी जाती है।
- मसाले भोजन को स्वादिष्ट एवं सुगंधित बनाते हैं।
- डेंगू, चिकनगुनियाँ, मलेरिया, फाइलेरिया मच्छरों द्वारा फैलने वाली बीमारियाँ हैं।
- संक्रमित कुत्तों या कुछ अन्य जानवरों के काटने से रेबीज नामक बीमारी होती है।
- मधुमक्खी के छत्ते से शहद एवं मोम प्राप्त होता है।

- मादक एवं नशीले पदार्थ हृदय रोग, वैंâसर, क्षय रोग, लीवर सिरोसिस, मानसिक उत्तेजना, स्मरण शक्ति में कमी आदि घातक रोगों को जन्म देते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प छाँटकर लिखिए -

(क) साइट्रस (नींबू जाति) फलों में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है -

(i) विटामिन A (ii) विटामिन B

(iii) विटामिन C (iv) विटामिन D

(ख) मलेरिया की दवा किस पौधे से प्राप्त होती है ?

(i) नीम (ii) सिनकोना

(iii) कपास (iv) सर्पगंधा

(ग) रेशा प्रदान करने वाला पौधा नहीं है -

(i) नीम (ii) कपास

(iii) जूट (iv) नारियल

(घ) सबसे अधिक प्रोटीन पाया जाता है -

(i) अनाजों में (ii) दालों में

(iii) फलों में (iv) सब्जियों में

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(क) हरी सब्जियों से ..... तथा ..... प्राप्त होते हैं।

(ख) मच्छरों से ..... तथा ..... रोग फैलते हैं।

(ग) ..... तथा .....मछली के यकृत से तेल निकाला जाता है।

(घ) मधुमक्खियों से ..... तथा ..... मिलता है।

3. निम्नलिखित कथनों में सही के सामने सही (√) का तथा गलत के सामने गलत (X) का चिह्न लगाइये-

(क) मादक-पदार्थ स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होते हैं।

(ख) रेशम के कीड़े शहतूत के पेड़ पर पाले जाते हैं।

(ग) लाख, पौधे से प्राप्त होती है।

(घ) कुत्ता घर की चौकीदारी करता है।

(ङ) सभी जन्तु तथा पौधे लाभदायक होते हैं।

4. हल्दी का प्रयोग खाने में करते हैं। इसका उपयोग और कहाँ किया जाता है ?

5. किन्ही दो हानिकारक पौधों तथा जन्तुओं के नाम लिखिए। वे हमें किस प्रकार हानि पहुँचाते हैं ?

6. नीम अत्यधिक लाभदायक वृक्ष है। उसके विभिन्न भागों के क्या उपयोग हैं ? लिखिए।

7. रेशम के कीड़े से रेशम कैसे प्राप्त किया जाता है ?

8. किन्ही पाँच लाभदायक पौधों तथा जंतुओं के नाम लिखिए तथा बताइए कि वे हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी हैं।

9. जन्तु हमारे लिए लाभदायक हैं। इस कथन की पुष्टि कीजिए।

प्रोजेक्ट कार्य

गमले में कोई दो उपयोगी पौधे लगायें तथा उनकी देखभाल करें।